संगीत चिंतामणि

आचार्य्य बृहस्पति

Scanned by TapScanner

विषय-सूची

१. भारतीय संगीत के कुछ शास्त्रकार

सांगीतिक ध्वनियों का मूल, नाद की स्वाभाविक व्यंजकता पृ० २१, आंगिक विकारों से भाव-व्यंजना, पाश्चात्य एवं भारतीय ऐतिहासिक दृष्टिकोण पृ० २२, भारतीय विचार-शैलियाँ पृ० २३, यज्ञ-नाट्य-युग पृ० २४, ब्रह्मा पृ० २७, शंकर पृ० २७, पार्वती, नंदिकेश्वर पृ० २८, नारद पृ० २९, स्वाति पृ० २९, तुम्बुरु, भरत पृ० ३०, कोहल पृ० ३४, दत्तिल पृ० ३४, स्कंद, शुक्र, विश्वावसु, अर्जुन पृ० ३५, विकास-युग पृ० ३५, याष्टिक आंजनेय पृ० ३६, वृद्ध काश्यप, विशाखिल, शार्दूल, राहल, मतंग पृ० ३७, किन्नरी वीणा पृ० ३८, सितार और सरस्वती वीणा के सारिका-स्थापन पर बाह्य प्रभाव और उसके परिणाम पृ० ३९, व्याख्या-काल पृ० ४२, कीर्तिधर, सुधाकलश, लोल्लट, घटक, रुद्रट, सागरनंदी, अभिनव गुप्त पृ० ४२,

२. नारदीय शिक्षा के कुछ निर्णायक स्थल

तीन सवन पृ० ४५, गात्रवीणा में सामिक स्वरों के नाम पृ० ४६, गांधर्व का लौकिक क्रम पृ० ४६, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित पृ० ४७, आचार्य अभिनव गुप्त का कथन पृ० ४७, स्वरित शब्द के साथ अत्याचार पृ० ४८, नारद की मूर्च्छनाएँ पृ० ४८, नारदीय-शिक्षा में ग्राम-विभाग का अभाव पृ० ४९

३. वाल्मीकि और संगीत

रामायण की पाठ्यता और गेयता पृ० ५०, लव और कुश को उपदेश पृ० ५०, भगवान् राम की परिषद् में संगीत के विशेषज्ञ पृ० ५१, गिरि व्रज में संगीत पृ० ५२, किष्किन्धा में संगीत पृ० ५२, लंकापुरी में संगीत पृ० ५२, प्रकृति में संगीत का दर्शन पृ० ५३, रावण और हनुमान की संगीतज्ञता पृ० ५४, कुशीलव के अर्थ में परिवर्तन पृ० ५५, परिभाषाएँ पृ० ५५।

४. कालिदास और संगीत

नाट्यशास्त्र से कालिदास का परिचय पृ० ५७, कुमार सम्भव में कैशिक राग पृ० ५८, मालविकाग्निमित्र में मायूरी मार्जना पृ० ५८, तानप्रदायिता और वर्ण-परिचय पृ० ५९, अभिनय की आलोचना पृ० ६०, लक्ष्मी स्वयंवर पृ० ६०, वाद-निर्णय पृ० ६१।

५. हंगरी, रूस और मंगोलिया के संगीत पर भारतीय प्रभाव

वाल्मीकि और मनु की कुछ ध्यान देने योग्य उक्तियाँ पृ० ६२, शिष्टमण्डल के सदस्य पृ० ६२, आर्मीनिया में महाभारत का अनुवाद पृ० ६३, हंगरी में दुभाषिया हंगरीवासियों के पूर्वज एशियावासी पृ० ६३, हंगरी के लोकगीतों पर भारतीय प्रभाव पृ० ६४, प्रो० हारमत्ता और छह प्राचीन भारतीय राग पृ० ६४, रूस में भारतीय राग और सदृश लोकवाद्य पृ० ६५, लेनिनग्राड के श्रोताओं को आश्चर्य पृ० ६५,

Scanned by TapScanner

कीव और येरवान में परिचित स्वरावलियाँ पृ० ६६, येरवान की एक गायिका के साथ सुलोचना जी की जुगलबन्दी पृ० ६६, मंगोलिया में महायान संप्रदाय पृ० ६६।

६. ध्रुवपद, के विषयों का स्रोत

चार पुरुषार्थ, पुरुषार्थ चतुष्टय का साधन गीत, वाग्गेयकार, गीतों का वर्गीकरण पृ० ६८, पार्श्वदेव कृत गीत-वर्गीकरण पृ० ६९, वाग्गेयकार का कठिन कर्तव्य पृ० ६९, मनुस्मृति में संगीत को आजीविका का साधन न बनाने की व्यवस्था पृ० ६९, वर्णसंकर जातियों की आजीविका पृ० ७०, कुशीलव पृ० ७०, नैतिकता की दुहाई और वास्तविकता पृ० ७०, आनुवंशिक संगीतजीवी पृ० ७२।

७. ध्रुवपद स्व० भातखंडे और वास्तविकता

ध्रुवपद की उत्पत्ति और लक्षण पृ० ७३, भावभट्ट-कृत ध्रुवपद लक्षण पृ० ७३ वेदपंडित का ध्रुवपद लक्षण पृ० ७३, ध्रुवक पृ० ७५, ध्रुव प्रबन्ध के सोलह भेद पृ० ७५, कल्लिनाथ की व्यवस्था पृ० ७६, रागदर्पण-कृत ध्रुवपद लक्षण पृ० ७७, तानसेन की दृष्टि में ध्रुवपद पृ० ७७, अबुल्फ़ज़्ल की दृष्टि में ध्रुवपद पृ० ५७, मुहम्मद करम इमाम की दृष्टि में ध्रुवपद पृ० ७८, निष्कर्ष पृ० ७८, ध्रुवपद की गायकी पृ० ७९, पाठ्य-क्रम में दुगुन-चौगुन पृ० ८०, पदाश्रित गीतियाँ पृ० ८१, ध्रुवपद की बानियाँ पृ० ८३।

८. ध्रुवपद में साहित्य

मानसिंह तोमर का कृतित्व पृ० ८६, तानसेन के जन्मकाल पर प्रकाश डालने वाला एक ध्रुवपद पृ० ८७, राजाराम बघेला से सम्बद्ध तानसेन-कृत ध्रुवपद पृ० ८८, औरंगजेब का संगीतानुराग पृ० ८८, तानसेन-कृत एक सैद्धान्तिक ध्रुवपद पृ० ८९, कुछ अन्य ध्रुवपद पृ० ९०।

९. मुसलमान, ग़ज़ल, क़व्वाली और खयाल

अरब और भारत के प्राचीन सम्बन्ध पृ० ९१, मुहम्मद बिन कासिम का आक्रमण और सिंध इत्यादि पर अरब प्रभाव पृ० ९२, खुसरो द्वारा भारतीय संगीत की प्रशंसा पृ० ९२, ग़ज़ल पृ० ९३, क़व्वाली पृ० ९४, ध्रुवपद-पद्धति का पुनरुत्थान पृ० ९५, दिल्ली पुनः राजधानी पृ० ९६, ख़याल पृ० ९३, मुहम्मद शाह रँगीले के युग के गायक पृ० ९६, वाजिदअली शाह का युग पृ० ९६, निरक्षर संगीतगुरुओं के द्वारा प्रशिक्षण का दुष्प्रभाव पृ० ९७, सितार और सरोद की लोकप्रियता का कारण पृ० ९७।

१०. ठुमरी में सनातन सांगीतिक तत्त्व

सौन्दर्य और उसकी अनंतता पृ० ९९, संगीत का प्रयोजन पृ० १००, संगीत पृ० १००, राग पृ० १००, युवतियों के सात्त्विक आभूषण पृ० १०१, ठुमरी पृ० १०३, कुछ ध्रुवपद-गायकों की दुष्प्रवृत्ति पृ० १०५, तानबाजी पृ० १०५।

Scanned by TapScanner